

भारत-नेपाल लिपुलेख दर्रा विवाद

IMPORTANT FOR

- All One Day Exam
- CGPSC Mains
 - Paper No. 02 (Essay)
 - Paper No. 05 (Indian Geography)

विवाद का कारण:-

हाल ही में नेपाल ने अपना नया नक्शा बनाया है, जिसमें भारत के तीन क्षेत्र कालापानी, लिपुलेख व लिम्पियाधुरा को शामिल किया गया है। अब नेपाल सरकार इस नक्शे को मान्यता प्रदान करने के लिए नेपाल के संसद में संविधान संशोधन बिल को पास करने की तैयारी में है।

तात्कालिक कारण :-

90 किलोमीटर लंबी धारचूला-लिपुलेख सड़क परियोजना का शुभारंभ भारत सरकार द्वारा 3 मई 2020 को किया गया था। इस सड़क के बन जाने के पश्चात चीन की सीमा से सटे 17,500 फीट की उंचाई पर स्थित लिपुलेख दर्रा उत्तराखण्ड के धारचूला से जुड़ जाता तथा सुरक्षा की दृष्टि से इस सड़क के बनने पर भारतीय सेना की पहुंच इस क्षेत्र में आसानी से हो पाती जो चीन के पक्ष में सही नहीं था एवं इस क्षेत्र में चीन की स्थिति कमजोर हो जाती, यही कारण था कि चीन ने कूटनीतिक मार्ग अपनाते हुए नेपाल को लिपुलेख दर्रे को नेपाली नक्शे में शामिल करने की सलाह दी।



लिपुलेख दर्रे की अवस्थिति :-

लिपुलेख दर्रा (उंचाई 17,000 फीट) भारत के उत्तराखण्ड राज्य और चीन के तिब्बत क्षेत्र के बीच की सीमा पर स्थित एक हिमालयी दर्रा है। नेपाल लिपुलेख दर्रे के दक्षिणी भाग जिसे “कालापानी” कहा जाता है उसे अपना भाग मानता है जो सन 1962 से ही भारत के नियंत्रण में है। वर्तमान में यह दर्रा भारत से कैलाश पर्वत व मानसरोवर जाने वाले यात्रियों द्वारा विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है।

Contact us : 9039361688, 8770718705

Follow us on :- RAJPUT TUTORIALS /



IMPORTANT FOR

- All Exam Interview
- CGPSC Mains
 - Paper No. 02 (Essay)
 - Paper No. 05 (Part-1, 2, 3)

अर्थव्यस्था के विकास में पर्यटन क्षेत्र का योगदान

पर्यटन देश के अर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण कारक है। पर्यटन क्षेत्र के महत्व को इसी बात से समझा जा सकता है कि दुनिया के करीब डेढ़ सौ देशों में विदेशी मुद्रा की कमाई करने वाले "5" प्रमुख क्षेत्रों में पर्यटन भी एक है। पर्यटन को आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। पर्यटन क्षेत्र देश के शीर्ष सेवा उद्योगों में से एक है इसका महत्व आर्थिक विकास और विशेष तौर पर देश के दूरदराज के क्षेत्रों में रोजगार सृजन के एक माध्यम के रूप में महत्वपूर्ण है।

देश के सकल घरेलू उत्पादन में पर्यटन क्षेत्र की हिस्सेदारी लगभग 6% है जो देश के करीब 5 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर प्रदान करती है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि कम दक्षता और अर्धदक्षता वाले श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने वाला दूसरा बड़ा क्षेत्र पर्यटन को माना जाता है।

पर्यटन क्षेत्र से बनने वाले प्रश्न

अर्थव्यस्था के विकास में पर्यटन के महत्व को रेखांकित कीजिए।



भारत एक प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विविधता वाला देश रहा है। यही कारण है कि यहां के पर्यटन स्थलों में भी विविधता पायी जाती है। इन्हे निम्न प्रमुख वर्गों में बांटा जा सकता है।

♦ धार्मिक स्थल-

प्रयागराज, हरिद्वार, अजमेर, वैष्णोदेवी, रामेश्वरम, पुरी, तिरुपति, बोधगया, श्रावनगोलबेला इत्यादि।

♦ ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल-

दिल्ली, आगरा, जयपुर, सांची, खजुराहो, एलोरा, गोलकुण्डा, बीजापुर, नालंदा, अमरावती इत्यादि।

♦ मनोरम स्थल-

मनोरम स्थल के अंतर्गत पहाड़ी सैरगाहों, समुद्री पुलिनों, राष्ट्रीय उद्यानों व जलप्रपात इत्यादि को शामिल किया जाता है " शिमला, धर्मशाला, दार्जिलिंग, गोवा, तीरथगढ़ जलप्रपात, इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान इत्यादि"।

भारत का पर्यटन उद्योग अपने पारंपरिक दायरों से बाहर निकलकर "चिकित्सा व योग" जैसे क्षेत्रों में अपने पैर पसार रहा है एवं लोगों को आय एवं रोजगार के नए अवसर उपलब्ध करा रहा है।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /



IMPORTANT FOR

- All Exam Interview
- All One Day Exam
- CGPSC Mains
 - Paper No. 02 (Essay)
 - Paper No. 05 (Part-2)

चक्रवातों का नामकरण

दरअसल चक्रवातों (Cyclon) के नाम एक समझौते के तहत रखे जाते हैं। इस पहल की शुरुआत अटलांटिक क्षेत्र में 1953 में एक संधि के माध्यम से हुई थी। अटलांटिक क्षेत्र में हरिकेन और चक्रवात का नाम देने की परंपरा 1953 से जारी है, जो मियामी स्थित राष्ट्रीय हरिकेन सेंटर की पहल पर शुरू हुई थी।



हिन्द महासागर (Indian Ocean) क्षेत्र के 8 देशों (भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीव, म्यानमार, ओमान और थाईलैंड) ने भारत की पहल पर 2004 से चक्रवाती तूफानों को नाम देने की व्यवस्था शुरू की थी। अंग्रेजी वर्णमाला (Alphabet) के अनुसार सदस्य देशों के नाम के पहले अक्षर के अनुसार उनका क्रम तय किया गया है, जैसे सबसे पहले बांग्लादेश फिर भारत, मालदीव और म्यानमार का नाम आता है। जैसे ही चक्रवात इन 8 देशों के किसी हिस्से में पहुंचता है, सूची में पहले से मौजूद अलग सुलभ नाम इस चक्रवात को दे दिया जाता है। इससे चक्रवात की न केवल आसानी से पहचान हो जाती है अपितु बचाव अभियानों में भी इससे मदद मिलती है। किसी भी नाम को दोहराया नहीं जाता है।

हाल ही में आए "निसर्ग" तूफान का नाम बांग्लादेश ने दिया था, जिसका अर्थ "प्रकृति" होता है।

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /   

IMPORTANT FOR

- All Exam Interview
- All One Day Exam
- CGPSC Mains
 - Paper No. 02 (Essay)
 - Paper No. 05 (Part-2)

लोनार झील

चर्चा का कारण-

1. हाल ही में लोनार झील को रामसर संरक्षण संधि (Ramsar Conservation Treaty) के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्व के आद्रभूमि स्थल (Wetland Site of International Importance) के रूप में चुना गया है।
2. हाल ही में लोनार झील के जल का रंग गुलाबी हो गया था। जो वैज्ञानिकों के लिए शोध का विषय बना हुआ है।



नोट:-

- लोनार झील का उल्लेख सबसे पहले स्कंद पुराण और पद्म पुराण जैसे प्राचीन शास्त्रों में किया गया है।
- लोनार झील का उल्लेख मुगल काल में लिखित "आइन-ए-अकबरी" में भी किया गया है।
- लोनार झील पर जाने वाला प्रथम ब्रिटिश अधिकारी "जे.ई. अलेक्जेंडर" था।

लोनार झील का निर्माण और इतिहास-

लोनार झील को लोनार क्रेटर भी कहा जाता है। इसका निर्माण लगभग 35000 से 50000 वर्ष पूर्व एक भारी उल्का पिंड (Bolide) के पृथ्वी से टकराने के कारण हुआ माना जाता है इस झील का पानी खारा है।

लोनार झील से संबंधित अन्य तथ्य-

- स्थान : बुलढाणा जिला (महाराष्ट्र)
- प्रकार : इफेक्ट क्रेटर लेक, सॉल्ट लेक
- मूल नाम : लोवर सरोवर (मराठी)
- सतह का क्षेत्रफल : 1.13 वर्ग कि.मी.
- जल की प्रकृति : खारा

Contact Us : 7089040001, 9039361688, 8770718705

Follow Us On :- RAJPUT TUTORIALS /

